Vijay Kumar Jha
Deptt in History
Asst. Prof
U.S.J College Rajnagar
Degree Part II

Eastablishment of Delhi Sultnate.

1206 से 1526 ई० तक सल्तनत काल कहा गया है किन्तु 1451 से 1526 ई० तक भारत में लोदी वंश का शासन रहा अतः सल्तनत काल कहा जाना ही उचित है। 1206 से 1526 ई० तक भारत पर पाँच प्रमुख राजवंशों ने शासन किये गुलाम वंश, खलजी वंश, तुगलक वंश सैयद वंश तथा लोदी वंश थे। चूंकि इन राजवंशों का शीघ्र परिवर्तन होता गया जिसका मूल कारण उत्तराधिकार के ठोस नियम का अभाव था। सभी राजे अपनी शक्ति और दबंगता के बल पर राजा बनता गया फलतः विद्रोह कि भावना पनपी और कोई भी राजे लम्बी अवधि के लिये राज्य नहीं कर सका, वैदेशिक आक्रमण, आन्तरिक विद्रोह अमीरों का प्रभाव, उलमा का प्रभाव, राजनीतिक दलबन्दी ने किसी भी सम्राट को शांतिपूर्ण शासन नहीं चलाने दिया। अधिकतर सुल्तान किसी राजवंश के नहीं थे बल्कि वे सैनिक बल पर राज सिंहासन हासिल कर लिये थे।

मोहम्मद गोरी ने भारत पर विजय तो प्राप्त कर लिया किन्तु वे शासन नहीं कर सके। उसके मृत्योपरान्त उनके द्वारा खरीदा गया एक गुलाम कुतुबुद्दीन सिंहासन पर बैठा अतः इस वंश का नाम गुलाम वंश पड़ा। उल्लेखनीय कि सभी गुलाम राजा नहीं थे क्योंकि कुतुबुद्दीन ने बाद जो भी गद्दी पर बैठा वह दासता कि बेड़ी से मुक्त हो चुका था अतः इसे गुलाम वंश कहना उचित नहीं लगता। इस वंश का शासन 1206 से 1290 ई० तक रहा। कुतुबुद्दीन अपनी योग्यता के बल पर गद्दी पर बैठा था। गोरी ने कुतुबुद्दीन को मलिक कि उपाधि दी थी। कुतुबुद्दीन को अनेक समस्याओं से जूझना पड़ा जैसे अमीरों कि समस्या, हिन्दू राजाओं कि

Scanned with Cam

समस्या, सीमाप्रान्तों कि सुरक्षा, बंगाल विद्रोह आदि समस्यायें पैदा हुई और अपनी चार वर्षीय शासन अवधि में 1210 ई० को लाहौर में उनकी मृत्यु हो गई। कुतुबुद्दीन भारत में इस्लामी साम्राज्य का संस्थापक था और कुशल सेनानायक भी उसने भारत को गजनी से संबंध विच्छेद कर मुक्त कराया।

1210 ई० में ऐबक के पुत्र आरामशाह अमीरों कि मदद से सल्तनत कि गद्दी पर बैठा। किन्तु दिल्ली के जनता उसे स्वीकार नहीं किया अतः कुतुबुद्दीन के दामाद इल्तुतमिस ने उसे पराजित कर दिल्ली सल्तनत का शासक बन गया। वह अपनी योग्यता के बल पर 25 वर्षों तक शासन किया और दिल्ली सल्तनत को शक्तिशाली बनाया। अतः गुलाम वंश का वास्तविक संस्थापक इल्तुतमिस को कहा गया। इल्तुतके समक्ष भी यल्दौज, कुबाचा, लखनौती जैसे शक्तिशाली अधिपति चुनौती के रूप में था. लेकिन इल्तुत दूर दृष्टि रखते हुए दिल्ली सल्तनत को सुरक्षित रखने का प्रयास किया। उसने क्रमशः समस्त शक्तिशाली सुल्तानों को धूल चटाया। उसने यल्दौज, कुबाचा, मंगोल, बंगाल, पंजाब, हिन्दुओं पर विजय प्राप्त किया। इल्तुतमिस ने खलीफा से नासिर उल मोमनिन कि उपाधि प्राप्त कर विधिवत दिल्ली सल्तनत का सुल्तान घोषित किया। 30 अप्रिल 1236 ई० में उसकी मृत्यु हो गई। वह मध्यकालीन भारत का श्रेष्ठ, चतुर और दूरदर्शी शासक था। भारत में मुस्लिम सत्ता का श्रीगणेश, इन्होंने ने ही किया उसने भारत में राजनीतिक एकता कायम किया।

चूंकि इल्तुतमिस का कोई योग्यपुत्र नहीं था जो गद्दी संभाल सकता अतः 1236 ई० को रजिया को सल्तनत की गद्दी पर बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। भारत में तुर्क शासन के इतिहास में वह पहली महिला शासक थी इसलिए प्रारम्भ में रजिया को प्रतिपतियों एवं अमीरों के विद्रोह झेलना पड़ा, किन्तु अपनी योग्यता और शक्ति से वे इन विद्रोहों को कुचलकर अपनी योग्यता सिद्ध कर दी। रजिया ने 1236 से 1240 तक शासन किया इस अवधि में उसे मुल्तान सूबेदारों का विद्रोह, ग्वालियर के दुर्ग कि समस्या और अन्य कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। 13 अक्टूबर 1240 ई० को हिन्दुओं ने षड्यंत्र रचकर रजिया कि हत्या कर दिया।

1240 से 1266 तक तीन सुल्तान गद्दी पर बैठे तीनों

कमजोर शासक सिद्ध हुये। 1265 में इल्तुतमिस के छोटे पुत्र नसी-
-रुद्दीन की मृत्योपरान्त ~~[illegible]~~ दामाद बलबन दिल्ली के सुल्तान 1265
ई0 में बन गये। बलबन अनुभवी, चतुर एवं अमर शासक था
अपने प्रधानमंत्रित्व काल में वे, स्वयं को शक्तिशाली घोषित किया
सीमा प्रान्तों कि सुरक्षा प्रदान किया, विद्रोहों का दमन किया एवं
मेवातियों को मौत के घाट उतार दिये। 1266 ई0 में जब वह
वास्तविक सुल्तान बना तो वह दिल्ली सल्तनत में एक नया तेज
आया और अपनी कमजोर आर्थिक स्थित को सुदृढ़ किया
इसने चालिस अमीरों के एक दल नियुक्ति किया ~~जिसका नाम~~
~~इल्त्था~~ इल्तुतमिस ने जिसे बलबन ने नाकाम कर दिया
क्योंकि ये बलबन के कार्य में बाधा डालते थे। बलबन राजपूत
राजों की शक्ति को कुचल डाला तथा इनके विद्रोहों का दमन किया
मंगोल आक्रमणों को भी कुचला।

बलबन ने प्रशासन के क्षेत्र में राजत्व संबंधी सिद्धान्त
प्रतिपादित किये जिसमें सुल्तान को ईश्वर का प्रतिनिधि माना
गया। उसने सुदृढ़ शासन व्यवस्था स्थापित के लिए केन्द्रीशासन
गुप्तचर व्यवस्था, न्याय विभाग, शक्तिशाली सेना का गठन किया
हिन्दुओं के प्रति बलबन का व्यवहार अच्छा नहीं था वह
हिन्दुओं को काफ़िर कहकर पुकारता था 1286 ई0 में
बलबन कि मृत्यु हो गई। बलबन के उत्तराधिकारी अत्यन्त कमजोर
थे। बलबन के मृत्यु के बाद उसका पुत्र कैकुबाद को अमीरों ने
गद्दी पर बैठाया वह एक अयोग्य एवं विलासी शासक था
उसकी अयोग्यता से लाभ उठाकर खिलजी सरदारों ने जलालु-
-द्दीन फ़िरोज के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया तथा 1290 ई0 में
कैकुबाद कि हत्या कर दी। इस प्रकार गुलाम वंश के शासन
का अन्त हो गया

Scanned with Cam